मजबूत होती साझेदारी

अमेरिका और जापान के रक्षा एवं विदेश विभाग के शीर्ष मंत्रियों ने द्विपक्षीय बातचीत में भारत के साथ बेहतर होते संबंधों पर संतोष जताया है. वाणिज्यिक तथा सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हिंद-प्रशांत क्षेत्र में ये तीन देश ऑस्ट्रेलिया के साथ व्यापक साझेदारी बनाने की दिशा में अग्रसर हैं. भारत, जापान और अमेरिका की पहली त्रिपक्षीय बैठक नवंबर, 2018 में हुई थी तथा दो संयुक्त सैन्याभ्यास भी हो चुके हैं. जी-20 शिखर सम्मेलन के आयोजन में हुए उस त्रिपक्षीय बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस साझेदारी के महत्व को रेखांकित करते हुए तीनों देशों के नाम के अक्षरों को मिला कर 'जय' की संज्ञा दी थी. उल्लेखनीय है कि कभी एशिया-प्रशांत के नाम से इंगित किये जानेवाले क्षेत्र को अब हिंद-प्रशांत क्षेत्र कहा जाता है. यह भारत की बढ़ती भूमिका का सूचक है. सबसे पहले अमेरिका ने इस नाम का प्रयोग किया था, लेकिन आज इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयुक्त किया जाता है. दक्षिण चीनी समुद्र में नियंत्रण तथा बेल्ट-रोड परियोजना एवं विविध निवेशों के माध्यम से चीन अपना वैश्विक वर्चस्व बढ़ाने की लगातार कोशिश कर रहा है. भारत, अमेरिका, चीन और ऑस्ट्रेलिया की पहल को चीन की काट के रूप में देखा जाता है. हालांकि ये देश ऐसी आशंकाओं को निराधार बताते रहे हैं, पर अंतरराष्ट्रीय व्यापार और कूटनीति के बहुपक्षीय स्वरूप को ठोस करने के लिए विभिन्न मंचों की आवश्यकता बढ़ गयी है. चीन के साथ भारत, अमेरिका और जापान के गहरे आर्थिक संबंध हैं तथा अलग-अलग मुद्दों पर तनाव के बाद भी परस्पर आर्थिक सहयोग को बढ़ाने के लिए ये सभी देश प्रयासरत रहे हैं, लेकिन यह भी सच है कि चीन अपनी नीतियों को लेकर आक्रामक है तथा अमेरिका का जोर संरक्षणवाद पर है. ऐसे में भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्था तथा क्षेत्रीय राजनीतिक शक्ति को इस खींचतान में संतुलन बनाने की चुनौती है. बीते सालों में इस चुनौती से पार पाने की कोशिश में भारत ने अमेरिका, रूस और चीन के साथ यूरोपीय संघ, आसियान, जापान, दक्षिण कोरिया, अरब के देशों से भी द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाया है. इसी प्रयास का परिणाम है कि बड़ी और विकसित शक्तियां भारत से निकटता को प्रगाढ़ करने में लगी हुई हैं. चीन, रूस और अमेरिका आपसी सहयोग के बावजूद आर्थिक, सामरिक और कूटनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में हैं. इस होड़ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है और इसमें निकट भविष्य में बदलाव की संभावना नहीं है. इन देशों से भारत के संबंध भी उतार-चढ़ाव से प्रभावित होते हैं, लेकिन भारत के साथ की आवश्यकता भी इन देशों को है. भारत एक ऐसे स्थान पर खड़ा है, जहां से वह अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य, समुद्री सुरक्षा तथा राजनीति को प्रभावित कर सकता है. जापान और अमेरिका के रुझान को इस दृष्टिकोण से भी देखा जाना चाहिए. इन तीन देशों की साझेदारी जहां वैश्विक स्तर पर सकारात्मक है, वहीं इन्हें चीन के साथ निरंतर संवाद से विवादित मसलों को सुलझाने का प्रयास भी करना चाहिए, ताकि व्यापक संतुलन स्थापित हो सके.

कभी एशिया-प्रशांत के नाम से इंगित किये जानेवाले क्षेत्र को अब हिंद-प्रशांत क्षेत्र कहा जाता है. यह भारत की बढ़ती भूमिका का सूचक है.

क्रिकेट विश्व कप की खराब ओपनिंग

हम जानते हैं कि पूरा ही देश क्रिकेट का दीवाना है. ज्यों ही 30 मई से क्रिकेट विश्व कप शुरू होगा, फिर देखिए, कैसे पूरे देश पर इसका बुखार चढ़ता है. चुनावी बुखार उतरेगा और क्रिकेट का बुखार चढ़ जायेगा. देश को भारतीय टीम से बेहद उम्मीदें हैं, पर विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में आपको अपने हर मैच में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा, लेकिन यह कोई रहस्य नहीं है कि भारतीय टीम के पहले तीन खिलाड़ी आप सस्ते में आउट कर दीजिए, उसके बाद टीम को धराशायी होने में देर नहीं लगेगी. चौथे नंबर के बल्लेबाज की खोज के लिए काफी दिनों से मशक्कत चल रही थी, लेकिन जब टीम की घोषणा हुई, तो समस्या जस-की-तस. जब मुकाबला बेहद कड़ा हो, तो खिलाड़ियों का चयन बहुत अहम हो जाता है, लेकिन भारतीय चयनकर्ता हमेशा से ही कुछ-न-कुछ लोचा करते आये हैं. चयनकर्ताओं की ऋषभ पंत और अंबाती रायडू की अनदेखी भारतीय टीम को भारी पड़ सकती है. चयनकर्ताओं की, इस फैसले के कारण, कड़ी आलोचना हो रही है.

हम जानते हैं कि लंबे समय से महेंद्र सिंह धौनी के उत्तराधिकारी की खोज चल रही है. उम्र का असर होता है और यह सच है कि वह अब पुराने धौनी नहीं रहे हैं, लेकिन मौजूदा खिलाड़ियों पर नजर डालें, तो अब भी किसी खिलाड़ी में धौनी जैसी खूबियां नहीं हैं. कुछ समय पहले धौनी के खिलाफ सोशल मीडिया में एक सुनियोजित अभियान चला था. यह बताने की कोशिश की गयी कि वह चुक गये हैं. उनके मुकाबले अन्य खिलाड़ियों को खड़ा करने का प्रयास भी हुआ था. यह साबित करने की भी कोशिश हुई थी कि उन्हें विदा करने का वक्त आ गया है, पर हर बार धौनी ने अपनी बल्लेबाजी और विकेटकीपिंग दोनों से अपने आलोचकों को करारा जवाब दिया है. उन्होंने हर बार यह साबित किया है कि भारतीय टीम में अब भी उनका कोई विकल्प नहीं है. सब मानते हैं कि भविष्य में धौनी के आसपास यदि कोई खिलाड़ी जा सकता है, तो वह केवल ऋषभ पंत ही हैं, पर पंत को विश्व कप में 15 खिलाड़ियों में स्थान नहीं दिया गया है. उनके स्थान पर दिनेश कार्तिक को विकेटकीपर के रूप में भारतीय टीम में शामिल किया गया है. दिनेश कार्तिक 33 साल के हैं और मुझे याद नहीं कि उन्होंने कभी अपनी ताबड़तोड़ बल्लेबाजी से किसी खेल का नतीजा पलटा दिया हो. दूसरी ओर अंबाती रायडू की भी दावेदारी बनती थी, लेकिन उनकी भी अनदेखी कर दी गयी है. जब कड़ी आलोचना हुई, तो चयनकर्ताओं की ओर से बयान आया कि ऋषभ पंत, अंबाती रायडू और तेज गेंदबाज नवदीप सैनी को विश्व कप के लिए स्टैंडबाय रखा गया है. अगर प्लेइंग इलेवन के खिलाड़ी चोटिल होते हैं, तो इन खिलाड़ियों को खेलने का मौका मिल सकता है. विश्व कप टीम में अपना नाम न होने के बाद रायडू का एक ट्वीट काफी चर्चित हुआ था. रायडू ने ट्वीट में लिखा था कि विश्व कप देखने के लिए अभी तत्काल 3डी चश्मे के लिए ऑर्डर किया है. दरअसल, चयन समिति के अध्यक्ष एमएसके प्रसाद ने रायडू पर विजय शंकर को प्राथमिकता देते हुए कहा था कि उनमें थ्री डाइमेंशनल क्वालिटी है.

आशुतोष चतुर्वेदी
प्रधान संपादक, प्रभात खबर
ashutosh.chaturvedi
@prabhatkhabar.in

धौनी के आसपास यदि कोई खिलाड़ी जा सकता है, तो वह केवल ऋषभ पंत ही हैं, लेकिन पंत को विश्व कप में 15 खिलाड़ियों में स्थान नहीं दिया गया है. दूसरी ओर, अंबाती रायडू की दावेदारी की भी अनदेखी कर दी गयी है.

मौजूदा दौर में सुनील गावस्कर जैसा कोई क्रिकेट विशेषज्ञ नहीं है. गावस्कर ने कहा कि वह युवा विकेटकीपर ऋषभ पंत के भारत की विश्व कप टीम से बाहर होने से हैरान हैं, क्योंकि वह बेहतरीन बल्लेबाजी फार्म में हैं और उसके विकेटकीपिंग कौशल में काफी सुधार हो रहा है. गावस्कर ने कहा कि यह कदम हैरानी भरा है. वह सिर्फ आइपीएल में ही नहीं, बल्कि इससे पहले भी काफी बेहतरीन बल्लेबाजी कर रहा था. वह विकेटकीपिंग में भी काफी सुधार दिखा रहा था. वह शीर्ष छह में बाएं हाथ की बल्लेबाजी विकल्प मुहैया कराता, जो गेंदबाजों के खिलाफ काफी कारगर साबित होता. गावस्कर का मानना है कि गेंदबाजों को बाएं हाथ के बल्लेबाजों के लिए अपनी लाइन व लेंथ में बदलाव करना पड़ता और कप्तान को मैदान में काफी इंतजाम करने होते. पंत ने इस मौजूदा आइपीएल में अभी तक कार्तिक से दोगुने से अधिक रन बनाये हैं. पूर्व भारतीय बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने भी इस फैसले पर आश्चर्य प्रकट किया. उन्होंने कहा कि पंत को केंद्रीय अनुबंध में शीर्ष वर्ग में शामिल किये जाने से उन्हें लगा था कि यह युवा खिलाड़ी भारत की विश्व कप टीम में जगह बना लेगा. भारत ने चौथे स्थान के विकल्प के लिए विजय शंकर को चुना है, लेकिन पता नहीं कि यह कारगर साबित होगा या नहीं? दिनेश कार्तिक तभी खेलेंगे, जब धोनी उपलब्ध नहीं होंगे. रायडू के बाहर रहने पर गौतम गंभीर ने भी सवाल खड़ा किया है. आश्चर्य है कि कप्तान विराट कोहली ने भी कुछ दिन पहले अंबाती रायडू को विश्व कप में नंबर चार पर बल्लेबाजी के लिए उपयुक्त बताया था. भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच रवि शास्त्री ने कहा है कि वह टीम चयन मामलों में पड़ना नहीं चाहते हैं. वह 16 खिलाड़ियों को शामिल करना चाहते थे, लेकिन आदेश 15 खिलाड़ियों का ही था. जो खिलाड़ी 15 सदस्यीय टीम में शामिल नहीं हो पाये हैं, उन्हें निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि उन्हें और मौके मिलेंगे. जाहिर है कि शास्त्री का इशारा पंत की ओर था.

विदेशों में भारतीय टीम की हार में चयनकर्ताओं की गलतियों का बड़ा योगदान रहा. दक्षिण अफ्रीका दौरे से शुरू हुई ये गलतियां अब तक जारी हैं. दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज में खिलाड़ियों के चयन में हर बार लोचा हुआ. क्रिकेट विश्व कप में भारत का पहला मैच दक्षिण अफ्रीका से है. अगर आपको दक्षिण अफ्रीका के दौरे पर गयी भारतीय टीम के प्रदर्शन की याद हो, तो वहां बल्लेबाजी में टीम की हालत खस्ता थी. भारत ने तीन टेस्ट मैचों की सीरीज में अंतिम टेस्ट जीत कर किसी तरह इज्जत बचायी. विकेटकीपिंग में तो टीम की कमजोरी सबके सामने उभर कर आ गयी थी. पहले टेस्ट में साहा थे, फिर पार्थिव पटेल आये और तीसरे टेस्ट में सब्स्टीट्यूट के रूप में दिनेश कार्तिक विकेटकीपिंग करते दिखायी दिये थे. तीनों बेअसर साबित हुए थे. हम कोहली को एक बल्लेबाज और एक कप्तान के रूप में देख चुके हैं. यह सच्चाई है कि इस वक्त विराट कोहली के स्तर का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कोई बल्लेबाज नहीं है. वह विपरीत परिस्थितियों में भी शतक लगाने से नहीं चूकते हैं, लेकिन यह भी सच है कि धौनी के बिना विराट कोहली अधूरे हैं. फील्ड की जमावट से लेकर गेंदबाज के चयन तक में उनकी अहम भूमिका होती है, पर माना जा रहा है कि विश्व कप के बाद धौनी संन्यास ले सकते हैं. हमें उनके उत्तराधिकारी को स्थापित करना था और विश्व कप इसका मौका था, लेकिन पंत की अनदेखी कर चयनकर्ताओं ने भारी भूल कर दी है.

चुनाव आयोग : शक्ति तो अब भी है

रविभूषण
वरिष्ठ साहित्यकार
ravibhushan1408@gmail.com

चुनाव आयोग की दयनीय दशा यह है कि सुप्रीम कोर्ट उसे याद दिला रहा है कि वह शक्तिहीन नहीं है. सुप्रीम कोर्ट द्वारा की गयी कार्रवाई के संबंध में पूछने पर उसने अपने को 'शक्तिहीन' बताया, जबकि संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत आयोग के पास 'अधिकारों का भंडार' है.

भारतीय चुनाव आयोग की स्थापना 25 जनवरी, 1950 को जिस 'स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव' को लेकर की गयी थी, उस पर सत्रहवें लोकसभा चुनाव में कई प्रश्न-चिह्न लग रहे हैं. चुनाव आयोग ने राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों, अभ्यर्थियों के लिए मार्गदर्शन के लिए जिस 'आदर्श आचार संहिता' का निर्माण किया था, उसका इस चुनाव में जितना उल्लंघन हुआ है, उतना पहले नहीं हुआ था. 'आदर्श आचार संहिता' में आचरण, सभाएं और जुलूस के संबंध में स्पष्ट निर्देश हैं. 'साधारण आचरण' के अंतर्गत साफ शब्दों में यह कहा गया है- 'किसी दल या अभ्यर्थी को ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए, जो विभिन्न जातियों और धार्मिक या भाषायी समुदायों के बीच विद्यमान मतभेदों को बढ़ाये या घृणा की भावना उत्पन्न करे या तनाव पैदा करे.' आचार संहिता का उल्लंघन अब सामान्य बात है. धर्माधारित और जाति केंद्रित राजनीति में एक-दूसरे के धर्म और जाति पर हमले करके ही वोट बटोरे जाते रहे हैं. राजनीति तो धर्म और जाति के सहारे चल कर ही आचार संहिता की धज्जियां उड़ाती हैं.

मुख्य चुनाव आयुक्त सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के समकक्ष है. दसवें मुख्य चुनाव आयुक्त टीएन शेषन (12 दिसंबर, 1990 - 11 दिसंबर, 1996) के पहले आचार संहिता केवल कागजों में थी, जिसे उन्होंने कड़ाई और सख्ती से लागू किया था. उनके समय यह कहा जाता था कि भारतीय राजनेता केवल दो से डरते हैं- ईश्वर से और शेषन से. राजीव गांधी की हत्या के बाद शेषन ने तत्कालीन सरकार से बिना पूछे ही लोकसभा चुनाव स्थगित करा दिये थे. चुनाव आयोग को उन्होंने शक्तिसंपन्न बनाया. उसकी स्वायत्तता बहाल की और इस संवैधानिक संस्था को पूरी गरिमा प्रदान की. उन्होंने चुनाव आयोग को सरकार का पिछलग्गू नहीं रहने दिया. चुनाव आयोग भारत सरकार का हिस्सा नहीं है. दो अगस्त, 1993 को शेषन ने सत्रह पृष्ठों का एक आदेश जारी किया था कि सरकार जब तक चुनाव आयोग की शक्तियों को मान्यता नहीं देती, तब तक देश में कोई भी चुनाव नहीं कराया जायेगा. के गोविंदन दुट्टी लिखित उनकी जीवनी 'शेषन- ऐन इंटीमेट स्टोरी' पढ़ कर उनके महत्वपूर्ण अवदान को जाना जा सकता है. चुनाव आयोग को 'सेंटर-स्टेज' में लाने का श्रेय केवल शेषन को है. एक इंटरव्यू में उन्होंने राजनेताओं को नाश्ते में खाने की बात कही है.

भारत के 23 मुख्य चुनाव आयुक्तों में शेषन के बाद 12वें मुख्य चुनाव आयुक्त जेएम लिंगदोह (14 जून, 2001 - 7 फरवरी, 2004) का नाम विशेष महत्वपूर्ण है. गुजरात नरसंहार (फरवरी-मार्च 2002) के बाद तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने सरकार पर लगे आरोपों के कारण आठ महीने पहले ही जुलाई 2002 में गुजरात विधानसभा भंग कर दी थी. अक्तूबर 2002 में चुनाव कराने की मांग चुनाव आयोग ने अस्वीकार कर दी. अन्य दो आयुक्तों- टीएस कृष्णमूर्ति और बीबी टंडन की सहमति से ही चुनाव आयोग ने यह निर्णय लिया था. इस निर्णय की नरेंद्र मोदी ने आलोचना की. साल 2002 में ही 20 अगस्त को वडोदरा के नजदीक बोडेली की एक जनसभा में उन्होंने लिंगदोह पर आक्रमण किया, उन्हें 'इटालियन' कहते हुए यह आरोप लगाया कि ईसाई होने की वजह से वे एक दूसरी ईसाई सोनिया गांधी की मदद के लिए गुजरात में चुनाव टाल रहे हैं. इस पर लिंगदोह ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी. यह कहा था कि उनका कोई धर्म नहीं है और अनेक समस्याओं के लिए 'धर्म' ही जिम्मेदार है. लिंगदोह ने घृणित, बिगड़े और विवादस्पद राजनीति की बात कही थी. तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और मानव संसाधन विकास मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने मोदी की अनुचित भाषा और टिप्पणी की आलोचना की थी.

अब चुनाव आयोग की दयनीय दशा यह है कि सुप्रीम कोर्ट उसे याद दिला रहा है कि वह शक्तिहीन नहीं है. चुनाव आयोग की निष्क्रियता के कारण ही शारजाह (संयुक्त अरब अमीरात) के एक अनिवासी भारतीय योग शिक्षक हरप्रीत मनसुखानी ने सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर कर कोर्ट से चुनाव आयोग को राजनीतिक दलों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने का अनुरोध किया. आचार संहिता का उल्लंघन हो रहा था और चुनाव आयोग शांत था. सुप्रीम कोर्ट द्वारा की गयी कार्रवाई के संबंध में पूछने पर उसने अपने को 'शक्तिहीन' बताया, जबकि संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत आयोग के पास 'अधिकारों का भंडार' है. सुप्रीम कोर्ट की डांट पर चुनाव आयोग की नींद टूटी और उसने योगी आदित्यनाथ, मायावती, आजम खान और मेनका गांधी पर 72 और 48 घंटे की भाषण देने और रैली करने पर रोक लगायी, जिसे योगेंद्र यादव ने 'सामने से सांड आने पर मक्खी मारने' जैसा कहा है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन किया है, पर चुनाव आयोग ने कोई कार्रवाई नहीं की है. नरेंद्र मोदी केंद्रित फिल्म, वेब सीरीज और नमो चैनल पर चुनाव आयोग का रवैया ढीला-ढाला रहा है. पूर्व नौकरशाहों ने राष्ट्रपति को लिखे अपने पत्र में चुनाव आयोग की 'साख का संकट' की बात कही है. इस समय संवैधानिक संस्थाएं बुरी तरह हिल रही हैं. पिछले आम चुनाव में चुनाव आयोग ने गुजरात प्रशासन को नरेंद्र मोदी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने को कहा था. उस समय मुख्य चुनाव आयुक्त बीएस संपत थे. अभी 2 दिसंबर, 2018 से मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा हैं.

आपके पत्र

एसिड अटैक के लिए हो कड़ी सजा

एसिड अटैक की खबरें फिर पढ़ने को मिलने लगी हैं. सरकार कमेटी बना कर सुकून की सांस लेती है और सब कुछ फिर से एक बार रूटीन ढर्रे पर लौट आता है. एसिड अटैक की वजह से बहुत सारी लड़कियों और महिलाओं की जान जा चुकी है. जो जीवित बच गयी हैं, उनकी जिंदगी बर्बाद हो चुकी है. एसिड पीड़िताओं की जिंदगी नारकीय बन गयी है. सरकार को कुछ और सख्त कानून बनाने चाहिए, जो एक नजीर साबित हो. साथ ही ऐसा कोई कानूनी प्रावधान भी होना चाहिए, जिसमें एसिड हमलों की शिकार महिलाओं को सभी तरह की सुरक्षा और सुविधाएं सुनिश्चित हों. मसलन, मुफ्त इलाज के साथ-साथ सरकारी नौकरी और सामाजिक सुरक्षा के लिए 'एसिड अटैक विक्टिम डेवलपमेंट फंड' बने. 'एसिड अटैक विक्टिम डेवलपमेंट सोसाइटी' जैसी संस्थाओं का गठन भी होना चाहिए, ताकि एसिड अटैक पीड़िता को कहीं से कुछ तो राहत मिल सके.

प्रज्ञा मंडल, कुर्मीचक, गोड्डा

गायब होता चुनावी मुद्दा

जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव आगे बढ़ते जा रहे हैं, वैसे-वैसे विकास के मुद्दे गायब से होते जा रहे हैं, क्योंकि पिछले कुछ दिनों से जिस प्रकार नेताओं के द्वारा चुनाव आयोग या इवीएम का जिक्र चुनावी रैली और जनसभाओं में हो रहा है, उससे ऐसा बिल्कुल नहीं लग रहा कि मौजूदा प्रत्याशियों को समाज की कोई चिंता भी है. अभी चुनाव के दो चरण ही हुए हैं कि इवीएम की गड़बड़ी की बातें शुरू हो गयी हैं. अतः ऐसा लग रहा है कि नेताओं को अभी से ही हार का डर सताने लगा है. तभी ये ऐसी बातें कर रहे हैं, ताकि हारने पर खुद के बचाव के लिए कुछ वैकल्पिक मुद्दे रह सके. आयोग की निष्पक्षता पर भी सवाल कर उसकी गरिमा को तार-तार किया जा रहा है. ऐसी संवैधानिक संस्थाओं पर दोषारोपण करने से कुछ नहीं होने वाला है.

शुभम गुप्ता, धनबाद

क्रिकेट का इक्का- माही

हिंदुस्तानी क्रिकेट के गहरे सागर से निकले अनमोल रत्नों में निश्चित रूप से दुनिया को ललकारने की काबिलियत है. बादशाह कोई भी हो हमारे पास माही के शक्ल में क्रिकेट का इक्का है. खेल के मैदान पर सफेद गेंद माही के इशारे पर घूमती है. सारा आलम माही के करिश्माई मौजूदगी का दीवाना है. माही क्रिकेट के कुरुक्षेत्र का वह सारथि हैं, जिसके हाथ में कमान नहीं, युद्ध की लगाम होती है. विकेट के पीछे खड़ा होने वाले माही ने कई उभरते खिलाड़ियों को अगली कतार में खड़ा कर दिखाया है. माही के क्रिकेट से रुखसत होने की बेवजह फैलाई गयी गफलत हर बार बेबुनियाद निकली है. 22 गज की पिच पर वर्षों लगातार दौड़ते हुए बार-बार धूम-धड़ाका जैसे नतीजों की उम्मीद सरासर नाइंसाफी है. फिर भी हालिया आइपीएल में कम उम्र खिलाडियों के सामने मिसाल बने माही दुनिया को चुनौती देते दिखेंगे. उम्मीद है विराट सेना माही जैसे सिपहसालार के साथ पूरी कायनात पर हुकूमत कायम करने में कामयाब होगी.

एमके मिश्रा, रातू, रांची

बोधि वृक्ष

हाउ ब्यूटीफूल!

एक बार एक मरीज एक चिकित्सक के पास आया. उस मरीज की बीमारी कभी करोड़ में एक आदमी को होती है. एक खास ढंग का ट्यूमर था उसके पेट में. चिकित्सक ने उसका पेट काटा, ट्यूमर निकाला और नाचने लगा. चिकित्सक ने कहा, 'हाउ ब्यूटीफूल!' वह ट्यूमर उसके रोग की गांठ थी. कोहिनूर हीरा जैसा वह ट्यूमर था. कभी करोड़ों में एक आदमी को होती है वैसी बीमारी और कभी हजारों में एक चिकित्सक को मौका मिलता है उसका ऑपरेशन करने का. यह बड़ी सुंदर चीज है. चिकित्सक को बीमार से मतलब नहीं है, उसे मतलब ट्यूमर से है. अब तुम सोच ही नहीं सकते कि ट्यूमर कैसे सुंदर हो सकता है! तुम्हारे पास चिकित्सक की आंख नहीं है. ट्यूमर और सुंदर! बात ही बेहूदी लगती है. लेकिन चिकित्सक अलग है. उसे बीमारी और बीमारी को ठीक करने में ज्यादा रस है; बीमार से कोई प्रयोजन नहीं है. यह बड़ा भारी फर्क है. जब तुम्हारी उत्सुकता बीमार में है, तब बीमार बीच में आ जाता है; बीमारी पीछे हो जाती है. तुम्हारे सामने बीमार है, उसके पीछे बीमारी है. और यह बीमार से तुम्हारा अगर रस बहुत है, तो तुम्हारे हाथ-पैर कांप जायेंगे. तुम कितने ही कुशल चिकित्सक क्यों न हो, सब कुशलता मिट्टी हो जायेगी. बीमारी पीछे हो जायेगी, बीमार आगे हो जायेगा. जब कोई चिकित्सक बिना किसी संबंध के किसी की चिकित्सा करता है, तो बीमार पीछे होता है, बीमारी सामने होती है. बीमार से कोई लेना-देना नहीं होता. बीमारी और चिकित्सक का सीधा साक्षात्कार होता है. तभी कुछ वैज्ञानिक घटना घट सकती है, निदान हो सकता है. गुरु की उत्सुकता चिकित्सक की उत्सुकता है. वह बीमारी को सामने रखता है, तुम को सामने नहीं रखता. वह बीमारी को मिटा देने में उत्सुक है. तुम पीछे हो. तुम्हारे व्यक्तिगत लगाव, आसक्तियों का कोई मूल्य नहीं है. गुरु ठीक से देख पाता है कि तुम कहां हो. गुरु ठीक से तुम्हें चला पाता है. अतीत के इतिहास में बड़ी कठिनाइयां इस संबंध में पैदा हुई हैं.

आचार्य रजनीश ओशो

कुछ अलग

नेताओं की यात्रा मुनाफेदार

आलोक पुराणिक
वरिष्ठ व्यंग्यकार
puranika@gmail.com

चुनावातुर नेता में भय और लज्जा का सख्त अभाव होता है.

वैसे भय और लज्जा हो, तो बंदा पॉलिटिक्स में आने से पहले सौ बार सोचेगा. सोचनेवाला बुद्धिजीवी बन जाता है, बिल्कुल नहीं सोचनावाला टीवी पर एक्सपर्ट बन जाता है और सोच कर बोलने को अपनी प्रगति का विरोधी माननेवाला नेता बन जाता है.

केजरीवाल कहते थे- कांग्रेस को निबटाना है. अब कांग्रेस से कह रहे हैं- प्लीज हमें साथ लो, वरना दोनों निबट जायेंगे.

प्रियंका चतुर्वेदी भूतपूर्व कांग्रेस नेता अब उस शिवसेना में हैं, जिस पार्टी के बंदों को वह गुंडा बताया करती थीं. प्रियंका चतुर्वेदी के विचार कुछ घंटों में सेकुलर से राष्ट्रवादी हो जायेंगे. शत्रुघ्न सिन्हा जी कांग्रेस में हैं, पत्नी समाजवादी पार्टी में हैं. कांग्रेसी शत्रुघ्न सिन्हा समाजवादी पार्टी की नेता पत्नी के लिए प्रचार कर रहे हैं. खैर शत्रुघ्न सिन्हा की बात तो समझ में आती है, वह कह सकते हैं- सबका साथ, सबका विकास. शत्रुघ्न सिन्हा जी राष्ट्रीय व्यक्तित्व हैं, सबके हैं. पार्टी की सीमाएं उन्हें नहीं बांध सकतीं. वैसे ये चुनाव भी राष्ट्र की सीमाओं में कहां बंध रहे हैं. पाकिस्तान बार-बार आ रहा है.

और नेताओं की क्या कहें, पब्लिक पाकिस्तान को पीटने की बात पर ताली बजाती है, साफ पानी और ठीक सड़क की बात हो, तो पब्लिक चुप हो जाती है. नेता भी क्या करें, जब नंबर ही पाकिस्तान को पीटने के मिल रहे हैं, तो इम्तहान में साफ पानी और ठीक सड़क का जिक्र क्यों करें. पाकिस्तान में अगर ठीक-ठाक चुनाव हों, तो हिंदुस्तान बहुत आम आये. लेकिन, पाकिस्तान में आर्मी उतनी शराफत से स्वतंत्र चुनाव होने देती है, जितनी शराफत से वह हाफिज सईद से विश्व में शांति प्रचार में लगी हुई है?

खैर पुरानी बातें याद करना और करवाना कष्ट देता है.

चुनावातुर नेता को सिर्फ वोट दिखते हैं. अभी कर्नाटक में राज्य सरकार के एक मंत्री नागिन डांस कर रहे थे. नागिन डांस के गीत के क्लासिक बोल हैं- तन डोले, मेरा मन डोले, मेरे दिल का गया करार... यह मूलतः राजनीतिक गीत है, जिसमें नेता कहना चाह रहा है कि इस चुनाव की बेला में मेरा-तन डोल रहा है, तन मुहल्ले-मुहल्ले में डोल कर वोट मांग रहा है. मेरा मन डोल रहा है कि चुनाव बाद सैटिंग सही बैठ जाये, तो इस पार्टी में चला जाऊं या उस पार्टी में. और इस चक्कर में मेरे दिल का चैन, मेरे दिल का करार चला गया है कि दल बदलने के बाद भी हार गया, तो क्या होगा.

नागिन डांस तक तो ठीक है, चुनावी मौसम में कुछ शरारती मतदाता कुत्ता नाच भी कराते हैं. इसमें नेताजी से चारों पैरों पर चलने के लिए कहा जाता है और नेताजी कर गुजरते हैं. इतने भर से काम चल जाये, तो बुरा सौदा नहीं है. क्योंकि उसके बाद तो पांच साल तक सियार, मगरमच्छ और गिद्ध बनने का लाइसेंस मिल जाता है. कुत्तत्व से गिद्धत्व की यात्रा बहुत मुनाफेवाली होती है नेताओं के लिए. और, हम पब्लिक का तो यह है भइया कि- कौन याद रखता है?

देश दुनिया से

नोत्र देम के पुनर्निर्माण के लिए चंदा इकट्ठा

पेरिस के नोत्र देम चर्च में लगी आग ने सदियों पुरानी विरासत को ध्वस्त कर दिया. इस चर्च को फिर से खड़ा करने के लिए चर्चा तेज हो गयी है. इसके पुनर्निर्माण के लिए अब तक 70 करोड़ यूरो की मदद आ भी गयी है. दुनिया की सबसे नामी कंपनियों में शामिल एपल के सीइओ टिम कुक ने दान करने की बात कही है. फ्रांसीसी अरबपति बैर्ना आर्नो का परिवार और लग्जरी सामान बनानेवाली उनकी कंपनी भी चर्च की मरम्मत के लिए बीस करोड़ यूरो देगी. लग्जरी सामान बनानेवाली कंपनी केरिंग के मुखिया फ्रांसुआ ऑनरी पिनो ने दस करोड़ यूरो देने का वादा किया है. दुनियाभर में अपने सौंदर्य प्रसाधनों के लिए मशहूर लोरियाल ग्रुप बेटेनकूर मेयेर परिवार और बेटेनकूर शुलर फाउंडेशन के साथ मिल कर बीस करोड़ यूरो देगा. फ्रांस की एयरलाइन एयर फ्रांस ने नोत्र दम के पुनर्निर्माण के लिए सभी तरह के सामान का ट्रांसपोर्टेशन मुफ्त करने की पेशकश की है. फ्रांसीसी तेल कंपनी टोटल ने कहा है कि वह दस करोड़ यूरो देगी. एएक्सए फ्रांस की एक जानी पहचानी बीमा कंपनी है, जिसने इस प्राचीन चर्च के लिए एक करोड़ यूरो देने की बात कही है. इसी तरह कई अन्य कंपनियों ने भी पैसे देकर इस विरासत को संभालने के लिए आगे आयी हैं.

कार्टून कोना

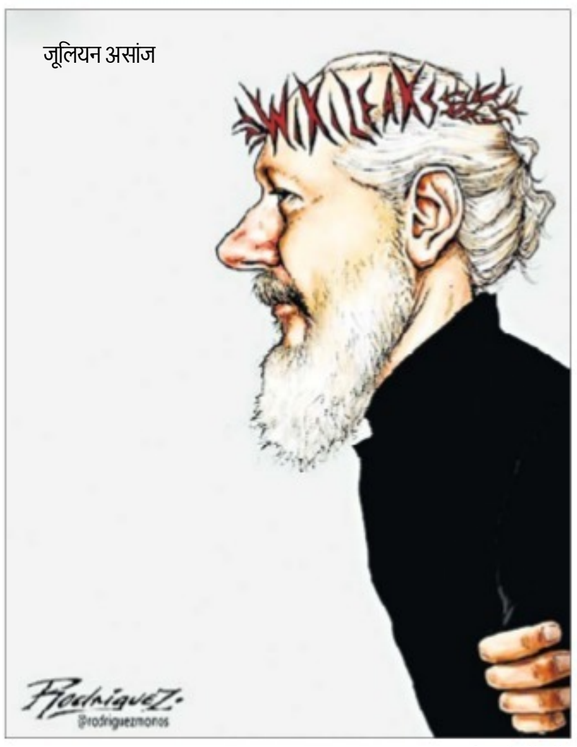

साभार : कार्टूनमूवमेंटडॉटकॉम

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है